1. **कैलाश मंदिर, एटा :**

मंदिर के विषय में कुछ महत्वपूर्ण जानकारी :

एटा शहर में स्थित इस मंदिर का निर्माण संवत 1924 में राजा दिलसुख राय बहादुर ने करवाया था | मंदिर निर्माण के साथ ही इसके आसपास के पूरे क्षेत्र का नामकरण भी कैलाशगंज हो गया है | धरातल से इस मंदिर की चोटी तक की ऊँचाई करीब 200 फुट है, जबकि शिवजी की चतुर्मुखी मूर्ति धरातल से लगभग सवा सौ फुट की ऊँचाई पर स्थित है | जमीन से लेकर मूर्ती तक का पूरा आधार ठोस है,धरातल से शिवजी की चतुर्मुखी मूर्ति तक के गर्भ स्थल में किसी प्रकार का खोखलापन नहीं है, इस ठोस गर्भ पर ही दीप के आकार में शिवजी के चारों दिशाओं में उभरे मुखों की सफ़ेद पत्थर से निर्मित मूर्ति रखी गयी है, मूर्ति के समीप ही सफ़ेद पत्थर से ही निर्मित नंदी की मूर्ति स्थापित है | इसके अलावा मूर्ति की दो विपरीत दिशाओं उत्तर व दखिण में क्रमश: गणेश व माँ पार्वती की सफ़ेद पत्थर से ही निर्मित आदमकद मूर्तियाँ स्थापित की गयी हैं | मंदिर की छत पर अजन्ता व अलोरा की तरह ही शानदार भित्ति चित्रों को उकेरा गया है, जिन्हें देखते ही श्रद्धालु खो जाते हैं | मंदिर के अन्दर पांच मंजिलों में अर्थात चतुर्मुखी मूर्ति की ऊँचाई तक 16 कमरे हैं | इसके अलावा मंदिर के धरातल के प्रांगण में एक ओर काफी विशाल सरोवर है जिसमें उतरने के लिए सीढ़ियाँ बनाई गयी हैं, सरोवर उपेक्षा के कारण ख़राब हालत में है | मंदिर के एक ओर बाग़ के लिए विशाल स्थान है, जो कि उपेक्षा का शिकार है |

१०८ सीढ़ियाँ चढ़नी पड़ती हैं :

मंदिर में ऊपर चढ़ने के लिए श्रद्धालुओं को 108 सीढियाँ चढ़नी पड़ती हैं, सीढियाँ 70 फुट की ऊंचाई के बाद तीन भागों में विभक्त हो जाती हैं, सबसे बाईं ओर की सीढ़ियाँ मंदिर में ऊपर जाने के लिए व दायीं ओर की सीढ़ियाँ नीचे उतरने के लिए हैं जबकि बीच में विश्राम स्थल बनाया गया है जिनका इस्तेमाल चढ़ते वक्त थक जाने वाले यात्री करते हैं |

शिवरात्रि और सावन में लगता है मेला :

फाल्गुन माह में शिवरात्रि महापर्व और श्रावण मास के दौरान मंदिर में मेले लगते हैं, इन पर्वों पर लाखों श्रद्धालुओं की भीड़ उमड़ती है, सावन के पूरे माह में पड़ने वाले सोमवार को भक्तों की विशेष भीड़ रहती है | सावन के सोमवार और महाशिवरात्रि के दौरान भक्तजन कांवरों में गंगाजल भरकर कोसों दूर की लम्बी पदयात्रा करके कैलाश मंदिर में शिवजी का जलाभिषेक कर मनौती मांगते हैं |

मंदिर के बारे में अन्य महत्वपूर्ण बातें :

1. किवदंती के अनुसार कैलाश मंदिर के नीचे एक सुरंग है जो कासगंज तक खुदी थी, सुरंग का द्वार मंदिर के ठीक नीचे है लेकिन सुरंग का द्वार सालों से बंद है जिसके कारण किसी के पास कोई ठोस जानकारी नहीं है की सुरंग कहाँ तक जाती है|

2. भारत में कहीं भी नहीं है ऐसी शिवजी की चतुर्मुखी मूर्ती |

3. सवा सौ फुट के ठोस गर्भ स्थल पर स्थित है अदभुत प्रतिमा |

4. पूरे उत्तर प्रदेश और उत्तराखंड में नहीं है इतना उंचा शिवजी का मंदिर |

5. धरातल से २०० फुट ऊंचा है कैलाश मंदिर |

2.Famous Sufi Sant Hazrat Abdul Gafoor Shah's Dargaah Situated in Holi Gate.

3. **दरगाह सैय्यद हसनशाह वारसी मारहरा दरवाज़ा पोता नगला एटा |**

जनपद एटा के मौहल्ला मारहरा गेट-पोता नगला में महान सूफी सन्त सैय्यद हसरशाह वारसी रहमतुल्लाअलैह व हाज़ी खैरावाती शाह वारसी रहमतुल्ला शाह की कफी पुरानी दरगाह है जिस पर प्रतिदिन सैकडों की मात्रा में हर धर्म के आस्थावान पुरूष व स्त्रियां आती हैं तथा इन्में से कुछ रातत्रि निवास भी करते हैं चुंकि आने वाले भक्तों की मुरादें पुरी होती हैं तो यहां जाने व ठहरने का सिलसिला निरंतर जारी है |

प्रतिवर्ष मोहर्रम की 20 तारीख से 23 तारीख तक उर्ष सम्पन्न होता है |

3. **बड़ा जैन मन्दिर**

4. **नशिया जी जैन मन्दिर**

जनपद एटा में नशिया जी जैन मन्दिर जो शिकोहाबाद रोड पर स्थित है |

4. काली मन्दिर

जनपद एटा में माता काली का मन्दिर जिसमें काली माता की बडी प्रतिमा है जो ठंडी सड्क रोड पर स्थित है

5. **सांई मन्दिर**

जनपद एटा में ठण्डी सड़क रोड पर स्थित साईं का मन्दिर है हर गुरूवार को यहां बहुत भीड हो जाती है |

6. **हनुमान गढी**

7.**सोंरों (गोस्वामी तुलसी दास जी का जन्म स्थान)**

- **सोरों** कासगंज (ज़िला एटा, उत्तर प्रदेश) से 9 मील दूर प्राचीन शूकरक्षेत्र है।
- प्राचीन समय में सोरों को सोरेय्य नाम से जाना जाता था।
- पहले सोरों के निकट गंगा बहती थी, किंतु अब गंगा दूर हट गई है।
- पुरानी धारा के तट पर अनेक प्राचीन मन्दिर स्थित हैं।
- तुलसीदास ने रामायण की कथा अपने गुरु नरहरिदास से प्रथम बार यहीं पर सुनी थी।
- उनके भ्राता नन्ददास जी द्वारा स्थापित बलदेव का मन्दिर सोरों का प्राचीन स्मारक है।
- गंगा नदी के तट पर एक प्राचीन स्तूप के खण्डहर भी मिले हैं, जिनमें सीता-राम के नाम से प्रसिद्ध मन्दिर स्थित है।
- कहा जाता है कि इस मन्दिर का निर्माण राजा बेन ने करवाया था।
- प्राचीन मन्दिर काफ़ी विशाल था, जैसा कि उसकी प्राचीन भित्तियों की गहरी नींव से प्रतीत होता है।
- अनेक प्राचीन अभिलेख भी इस मन्दिर पर उत्कीर्ण हैं, जिनमें सर्वप्राचीन अभिलेख 1226 विक्रम सम्वत=1169 ई. का है।
- कहा जाता है कि इस मन्दिर को 1511 ई. के लगभग सिकन्दर लोदी ने नष्ट कर दिया था।
- सोरों के प्राचीन नाम सोरेय्य का उल्लेख पाली साहित्य में भी है।

8. **जनता दुर्गा मन्दिर**

9. **विजय नगर**

10. **पथवारी मन्दिर**

11. एटा भी विश्व प्रसिद्ध गुरुकुल के लिए जाना जाता है. यह पारंपरिक तरीकों का उपयोग शिक्षा प्रदान करने के लिए कहा है. गुरुकुल प्राचीन आवासीय विद्यालय हैं.